

## कर्मठ हिंदी सेवी: श्री बाल शौरी रेड्डी का दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रसार और प्रचार में योगदान

डॉ. एस. प्रीति<sup>1</sup>, मनोज कुमार<sup>2</sup>

<sup>1</sup>हिंदी विभाग, फैकल्टी ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड बिजनेस स्टडीज, एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, कॉटनकोलेथूर -603203

<sup>2</sup>सहायक आचार्य हिन्दी राजकीय महाविद्यालय सोलन

### शोध सार-

दक्षिण में हिंदी प्रचार का बीड़ा महात्मा गांधी ने उठाया था। उनके आह्वान पर जो व्यक्ति उनके साथ जुड़े उनमें बालशौरी रेड्डी का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। उन जैसे निष्ठावान और समर्पित हिंदी लेखकों की साधना के कारण ही दक्षिण के किसी भी कोने में चले जाएँ तो राजनीतिक वाद-विवाद के रहते हुए भी, किसी को हिंदी में बात करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। एक उच्च कोटि के कथाकार होने के साथ-साथ उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं में भी अपनी प्रतिभा का प्रचुर प्रयोग किया है जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। 'चंदामामा' के हिंदी संस्करण के संपादक के रूप में उनकी लोकप्रियता आबाल-वृद्ध, नर नारियों में रही। एक विशिष्ट हिंदी-सेवी और लेखक के रूप में देश की जनता में उनका जो सर्वत्र समादर हुआ है, वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं। उनकी कृतियाँ जहाँ अनेक हिंदी संस्थाओं और प्रतिष्ठानों के द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित हुई हैं, वहाँ देश के कई विश्वविद्यालयों में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर सर्वांगीण शोध और अनुसंधान हो रहा है।

**बीज शब्द** -कर्मठ, हिंदी सेवी, गांधीजी, चंदामामा, मानवता, नैतिकता।

### मुख्य आलेख

तमिल के प्राचीन व प्रसिद्ध ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' में कहा गया है कि 'जन्मो तो यशस्वी होकर जन्मो नहीं तो न जन्मना श्रेष्ठ है।' सादगी और सहजता की प्रतिमूर्ति हैं बालशौरी रेड्डी। एक कर्मठ एवं समर्पित साहित्यकार होने के साथ-साथ दक्षिण भारत में हिन्दी का परचम फहराने वाले प्रमुख व्यक्ति हैं। वे सेतु बने उत्तर-दक्षिण के बीच में। श्री बालशौरी रेड्डी एक ऊर्जावान और गत्यात्मकता के धनी विद्वान थे। उनके लेखन में मानवता, नैतिकता, भारतीयता के उच्च एवं श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे।

आदरणीय बालशौरी रेड्डी जी का जन्म 1 जुलाई 1928 को कड़पा जिले के गोल्लल गुडूर के मध्यवर्गीय प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में हुआ था। पिता का नाम गंगिरेड्डी तथा माता का नाम ओबुलम्मा। चार वर्ष की उम्र में ही रेड्डी जी के सिर से माँ का साया उठ गया। पिता ने पुत्र के हित में पुनर्विवाह नहीं किया। आजीवन विधुर ही रहे। रेड्डी जी अपने पिता का जिक्र करते समय हमेशा कहते 'माई फादर ईस मई गॉड' उनकी आँखें सजल हो उठतीं। रेड्डी जी अपने नाम के अनुसार शौर्यवान थे। वे जब भी किसी से मिलते उनके चेहरे पर चित्त-चोर मुस्कान छाया रहती है। उनकी मातृभाषा तेलुगू। तेलुगू बड़ी मीठी (पोन्नी) भाषा मानी जाती है। बालशौरी रेड्डी का सारा व्यक्तित्व ही मानो उसी मिठास से रचा गया है। मुस्कुराता हुआ चेहरा, आँखों में अपनत्व की भावना, बोलेंगे तो ऐसा लगता है कि यूँ सुनते ही रहें। वे अपने नाम बालशौरी (बाल-विष्णु) को सार्थकता प्रदान करते हैं। साहित्यकार विलास गुप्त जी श्री रेड्डी के शारीरिक गठन, स्वभाव

एवं व्यक्तित्व के बारे में कहते हैं- “छोटा सा कद, दुबला पतला शरीर, आँखों में अजीब सा भोलापन और हुमक-हुमक कर हँसते हुए बात करने की आदत-वाकई बालशौरी रेड्डी में बहुत से बालतत्व मौजूद हैं”।<sup>1</sup> संपन्न परिवार की सुभद्रा देवी जी से दिनांक 14-06-1957 को वैवाहिक जीवन में पदार्पण हुआ। वैवाहिक जीवन सुखमय व समृद्ध था। दो पुत्रियों व एक पुत्र के पिता। पारिवारिक चिंता कभी न करनी पड़ी। पत्नी ने घर की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। अंग्रेजी कहावत - Behind every successful Man there is a Woman यह इनके जीवन में सार्थक हुई।

#### गाँधीजी का प्रभाव-

हाई स्कूली शिक्षा प्राप्त करते समय सन् 1946 ई. में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की रजत जयंती के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी को निकट से देखने के लिए इस समारोह में शामिल हुए। उन दिनों श्री रेड्डी जी राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के स्वयंसेवक भी थे। लोग चन्दा देकर गाँधी जी के पावन हस्ताक्षर ले रहे थे। बालशौरी रेड्डी जी ने हरिजन निधि के लिए पाँच रुपये दान दिए। पुस्तिका न होने के कारण उन्होंने एक रुपये के नोट पर ही गाँधी जी के हस्ताक्षर लिए। गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा - स्वतंत्र भारत की भाषा हिन्दी ही होगी। सब उसे सीखें। श्री रेड्डी इस भाषण से प्रभावित हुए। हिन्दी भाषा सीखने तथा हिन्दी में सर्जनात्मक कार्य करने की यह उनके जीवन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। उन्हीं के शब्दों में- “विद्यार्थी जीवन में इतिहास के अध्यापक श्री रामस्वामी जी की प्रेरणा से संपूर्ण भारत देखने की अभिलाषा मेरे मन में हुई थी। यही इच्छा आगे चलकर मुझे हिन्दी के लिए उत्तर भारत की ओर ले चली।”<sup>2</sup>

बिहार के देवधर विद्यापीठ में राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन कर श्री बालशौरी रेड्डी जी ने सन् 1948 ई. में काशी परीक्षा केन्द्र से ‘साहित्यालंकार’ की उपाधि प्राप्त की। साहित्य रत्न की उपाधि सन् 1949 ई. में इलाहाबाद से प्राप्त की। उन्हीं के शब्दों में “मैंने राष्ट्रभाषा हिंदी का विस्तृत ज्ञान एवं उपाधियाँ उत्तर भारत में प्राप्त की।”<sup>3</sup> सन् 1948 में जब वे वाराणसी में थे- साहित्य सृजन की प्रेरणा चार महानुभव साहित्यकारों के स्नेह, प्रोत्साहन और सहयोग से मिली। ये थे- महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’, श्री काशीनाथ उपाध्याय ‘भ्रमर’, श्री कमलापति त्रिपाठी और श्री गंगाधर मिश्र उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए- “लिखने की प्रेरणा मुझे भ्रमर जी ने दी। उन्होंने मेरी आरंभिक रचनाओं को ग्राम संसार में छापा। निराला जी, त्रिपाठी जी तथा मिश्र जी का स्नेह और प्रोत्साहन मैं भूल नहीं सकता।”<sup>4</sup>

श्री रेड्डी जी सन् 1948 के आस-पास बनारस में थे। वहाँ की परिस्थितियों से प्रभावित उन्होंने कविता करने का साहस किया। सरोजिनी नायडु की मृत्यु के संदर्भ में आयोजित एक सभा में भारत कोकिला शीर्षक से कविता का पाठ किया। सभा में उपस्थित सभी विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। श्री रेड्डी जी की दो-चार आरंभिक कविताएँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। काव्य-सृजन में कोई संतोष नहीं हुआ। उस समय की दुविधा को श्री रेड्डी जी इस प्रकार प्रकट करते हैं- “मैंने सोचा, यदि मैं असंतोष को इसी प्रकार पालता रहूँ तो एक दिन अवश्य पागल हो जाऊँगा। इसी संशयात्मा को लेकर मैं अपने प्राचार्य पं. गंगाधर मिश्र जी की सेवा में पहुँचा और उनसे अपनी आत्मग्लानि की बात बताई। पंडित जी ने बड़ी सहानुभूति, सहृदयता और वात्सल्य भाव से मुझे समझाया-रेड्डी जी, मैं सच्ची बात कहूँगा, तुम निराश न होना। क्योंकि मैं तुम्हारा हित चाहता हूँ और तुम्हारी प्रतिभा से भी परिचित हूँ, इसलिए मैं तुमको गलत राह पर छोड़ना नहीं चाहता। सत्य तो यह है कि तुम जितना अच्छा गद्य लिख सकते हो उतनी अच्छी कविता नहीं। मेरा अनुभव यह बताता है कि गद्य के प्रति तुम्हारी स्वाभाविक जो अभिरुचि है, जो झुकाव है, जो लगन है, वह कविता के प्रति चाहते हुए भी नहीं हो सकती।... अतः तुम्हारे हितैषी के नाते मेरी यही सलाह है कि तुम समय और सन्दर्भ के अनुरूप गद्य की विभिन्न विधाओं पर कलम चलाओ, अवश्य तुम्हें सफलता मिलेगी। पंडित जी का यह सुझाव भावी

साहित्यिक सर्जनात्मक यात्रा का पाथेय बना और संबल बना।<sup>5</sup> इस प्रकार रेड्डी जी अपने भावी जीवन में पद्य विधा को छोड़कर गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में सर्जनात्मक कार्य करने लगे।

रेड्डी जी लेखक या साहित्यकार को समाज का अंग मानते हैं, जब समाज में कोई अन्याय हो तो उसे देखकर साहित्यकार चुप नहीं रह सकता। इसीलिए अपनी प्रतिक्रिया को सृजनात्मक माध्यम से लेखक को प्रस्तुत करना पड़ता है। रेड्डी जी का विचार है कि लेखक अपनी रचनाओं के द्वारा समाज को अवश्य परिवर्तित कर सकता है। वे भाषा से अधिक अनुभूति को प्रधानता देते हैं। इसलिए उनकी हर कृति में अनुभूति की गरिमा व तीव्रता अवश्य दिखाई देती है। रेड्डी जी का साहित्य-सृजन हिन्दी तक सीमित नहीं है। वे स्वयं तेलुगु भाषी हैं। उनकी निश्चित धारणा थी कि जब तक प्रान्तीय भाषा का साहित्य हिन्दी के द्वारा भारत भर में नहीं फैलेगा तब तक राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता नाम मात्र ही रहेगी, एक साक्षात्कार में बताते हैं – "साहित्य क्षेत्र में मेरा पदार्पण बड़े ही नाटकीय ढंग से हुआ। मैंने अपनी 20 वर्ष की आयु तक कभी लिखने की कोशिश की नहीं, और न ही लिखने की इच्छा ही रही। आज 14 साल से लिख रहा हूँ। विध्याचल समीपवर्ती प्रकृति ने मुझे लिखने की प्रेरणा दी। प्रकृति के उस अपूर्व सौंदर्य की आराधना करते समय मेरी अनुभूतियाँ अभिव्यक्त होने के लिए तड़प उठीं। प्रारम्भ में मैंने हिन्दी में ही लिखा। ग्राम संसार और संसार में मेरी प्रारंभिक रचनाएँ छपीं। जिस दिन रचना छपी उस दिन मेरे अन्दर में ऐसा ज्वार उठा जिसने मुझे इतना प्रभावित किया कि मेरा रचना कार्य निरन्तर गतिमान रहा। मैंने अपनी रचना को चार-पाँच बार पढ़ा, जो कोई सामने आया उसको दिखाया, सलाह एवं सुझाव माँगे।"<sup>6</sup>

### साहित्य लेखन पर एक दृष्टि

चंदामामा के संपादन के द्वारा उन्होंने हिंदी बाल साहित्य को संपन्न बनाया और कथाकार के रूप में कई उपन्यासों की रचना की। रचनाकार की हैसियत से रेड्डी जी दक्षिण भारत के उन साहित्यकारों की श्रेणी में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिन्होंने हिंदीतर भाषी होते हुए भी समकालीन हिंदी साहित्य को गौरव प्रदान किया है। रेड्डीजी की प्रथम कृति 'पंचामृत' 1954 में प्रकाशित हुई जो भाषांतरित ग्रंथ है। उक्त ग्रंथ में तेलुगु के पाँच युग प्रवर्तक महान मनीषियों की साहित्य सेवा का परिचय दिया गया। इसके प्रथम पचास पृष्ठों में आन्ध्र प्रदेश के साहित्य व संस्कृति पर प्रकाश डाला गया। नाम के अनुरूप यह ग्रंथ अमृत साबित हुआ। पाँच महान् विभूतियों को उत्तर से जोड़ दिया। नवभारत टाइम्स ने पंचामृत को राष्ट्रभारती का अभिषेक- शीर्षक देकर समीक्षा की। आचार्य शिवपूजन सहाय ने 'साहित्य' त्रैमासिक के अक्टूबर 1955 के अंक में उक्त पुस्तक पर विशेष सम्पादकीय लेख लिखा और घोषणा भी की कि यह कृति उत्तर-दक्षिण के सांस्कृतिक समन्वय का आधार स्तंभ है। इसी सिलसिले में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. पट्टाभि सीतारामय्या, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री प्रकाश, श्री बच्चन जी आदि मनीषियों की प्रशंसा के पत्र भी रेड्डी जी को मिले। इस कृति का अनुवाद रूसी भाषा में हुआ है।

सामाजिक प्रतिबद्धता उनके कथा साहित्य की मूल चेतना है। उनके मौलिक उपन्यासों – माटी की महक, शबरी, जिंदगी की राह, यह धरती-ये लोग, भग्न सीमाएँ, बैरिस्टर, स्वप्न और सत्य, धरती मेरी माँ, प्रोफेसर, धरती का पुत्र, दावानल, लकुमा, प्रकाश और परछाई आदि में देखने को मिलती है 'माटी की महक' (शाबरी) में गाँधीवादी विचार का प्रभाव दिखाई देता है। भग्न सीमाएँ में परम्परागत और आधुनिक युवाओं के निर्णय संघर्ष को प्रस्तुत किया गया।

बैरिस्टर में- बेमेल विवाह, बहुविवाह, झूठी सभ्यता के भयंकर परिणाम, भारतीय नारी की गरिमा, सरलता एवं सहिष्णुता का चित्रण किया गया। स्वप्न और सत्य में-ग्राम से महानगर तक के जीवन का चित्रण भारत की भू-सम्पदा के वैज्ञानिक, अनुसन्धान और जीवन के रागात्मक पक्ष का चित्रण देखने को मिलता है।

धरती मेरी माँ – कर्तव्य, प्रेम और मैत्री के चारों ओर इस उपन्यास का कथानक घूमता है। धरती मेरी माँ की पाण्डुलिपि को पढ़कर डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अपनी प्रशंसा में एक पत्र लिखा था, जिसे रेड्डी जी अपने जीवन की अमूल्य धरोहर मानते हैं। राजकीय सेवा में लगे अधिकारियों की पत्नियों की मानसिकता का दर्पण है 'प्रोफेसर' उपन्यास। "औरों को देखो अपनी पत्नियों को सारी दुनिया की सैर कराते हैं, फारिन गाड़ियों में घूमते हैं। हीरे व जवाहरातों से अपनी पत्नियों को लाद देते हैं। तुम कभी मेरी फिक्र ही नहीं करते, उल्टे जब देखो, मुझ पर खीझते हो, डाँटते हो, गालियाँ देते हो, कभी-कभी पीटते भी हो।"<sup>7</sup>

ऐतिहासिक उपन्यास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपन्यास है लकुमा। आंध्र के वैभवपूर्ण गरिमामय इतिहास में रेड्डी साम्राज्य अपना विशिष्ट महत्व रखता है। 13वीं शती में जब कुमारगिरी रेड्डी कोण्डवीडु राज्य पर शासन करते थे तब का इतिहास प्रस्तुत उपन्यास में कल्पना के परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। दूसरा उपन्यास प्रकाश और परछाई – महाराजा कृष्णदेवराय के काल को लेकर लिखा गया है। लेखक एक बालक के उज्ज्वल, उत्साहपूर्ण परिश्रमी चरित्र का चित्रण करता है।

लेखक के समस्त उपन्यास शिल्प की कसौटी पर खरे उतरते हैं। भाषा पर बालशौरि रेड्डी जी का अद्भुत अधिकार है। हाँ, इतना अवश्य है कि उनकी भाषा में मातृभाषा तेलुगु की प्यारी गन्ध भी सूँघने को मिलती है। उनकी कोमल कान्त पदावली के दर्शन 'माटी की महक' (शबरी) में द्रष्टव्य हैं।

"सूर्य की अरुण किरणें पृथ्वी का चुम्बन कर रही हैं।"<sup>8</sup> कहानी-लेखन में लेखक की जबर्दस्त पैठ है। उनके कथा-संग्रह का नाम है 'वैसाखी'। इसमें 17 कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में सामाजिक विसंगतियाँ, शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, नारी के प्रति होने वाला अनाचार, और अन्य प्रकार के राजनैतिक जीवन में होने वाले दुष्कर्मों का मुँहबोला चित्रण हुआ है। चाँदी का जूता रेड्डी जी की, हृदय को झकझोर देने वाली कहानी है। दहेज की कुप्रथा पर कुठाराघात करती है यह कहानी। "मैंने बरतन में हाथ डाला तो कोई चीज हाथ लगी .....वह चाँदी का जूता था। मेरे समधी ने वह जूता मेरे सिर पर नहीं दिल पर मारा था।"<sup>9</sup> इस कहानी का अनुवाद उर्दू, मराठी, कन्नड़, तमिल, मलयालम, डोगरी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में हुआ है।

'दिल का काँटा' बहन द्वारा किए गए विश्वासघात का चित्रण करती है। इस प्रकार इनकी अन्य कहानियाँ अतृप्त कामना, बैसाखी, घर और गृहस्थी, पापी चिरायु, भूख हड़ताल और प्रकाश की ओर आदि कहानियों में सामाजिक विषमता के अनेक रूप उकेरे गए हैं। जो समाज और जीवन का मार्मिक चित्रण का दर्शाती हैं, मानवीय संवेदना की लेखक को गहरी पहचान है जिसे उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों से सीखा है।

बाल साहित्य पर विचार करते समय श्री बालशौरि रेड्डी तीन बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी समझते हैं – सृजन, प्रकाशन और उपलब्धि। वे आयु वर्ग की दृष्टि से भी – बाल-साहित्य को विभिन्न वर्गों में बाँटने के हिमायती हैं। उनके अनुसार प्रारम्भ में हम बच्चों को ऊँचे बौद्धिक स्तर का साहित्य दें, तो वे पूर्ण रूप से हृदयंगम कर उसका लाभ नहीं उठा पाएँगे। इसलिए प्रारंभिक बाल-साहित्य में कौतूहल और जिज्ञासा की पूर्ति करनेवाली सामग्री भरपूर हो और साथ ही वह साहित्य उनका मनोरंजन करनेवाला हो और ज्ञानवर्धक भी हो। जैसे-जैसे उनका मानसिक विकास होता है उसके अनुरूप साहित्य देना हमारा कर्तव्य हो जाता है।

बाल साहित्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए पॉल हजार्ड ने अपनी कृति 'बुक्स चिल्ड्रन एंड मैं' में लिखा है कि-" मैं ऐसी पुस्तकों को पसंद करता हूँ जो साहित्य की आत्मा के प्रति वफादार होती हैं जो ऐसा सरल सौंदर्य प्रस्तुत करती

हैं जिसे बच्चा तुरंत ग्रहण कर सकता है जो बच्चे के हृदय में ऐसी चेतना ऐसा स्पंदन भर देती हैं जो बच्चों के जीवन की स्थाई संपत्ति बन जाती है जिनमें बढ़िया चित्र होते हैं ऐसे चित्र जिन्हें बच्चे पसंद करें जिन्हें समस्त विश्व के कला वैभव से चुना गया हो मुझे ऐसी पुस्तकें पसंद हैं जो बच्चों को महान मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति कराती हैं जो ज्ञानवर्धक और नैतिक गुणों से युक्त होती हैं।"<sup>10</sup>

सामान्यतः हिन्दी संसार बालशौरि रेड्डी को 'चन्दमामा' के संपादक के रूप में जानता है। दो दशकों से अधिक समय तक इस पत्रिका को विविध सामग्री से आकर्षक बनाने में उनकी पत्रकारिता का कौशल देखते ही बनता है। इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों के लिए एक से बढ़कर एक वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सामाजिक कहानियाँ प्रस्तुत की। बाल साहित्य के प्रयोजनों एवं गुणों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है- "मेरी दृष्टि में बाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो, उसमें अनावश्यक वर्णन न हो और बुनियादी तत्वों का चित्रण हो। कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल, सहज, और समझ में आने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।"<sup>11</sup> श्री रेड्डी जी ने तेलुगु की लोककथाएँ, आंध्र के महापुरुष, तेनाली के राम के लतीफे, तेनाली राम के नये लतीफे, बुद्ध से बुद्धिमान, आदर्श जीवनियाँ जैसी बालोपयोगी कृतियों की रचना की। तेलुगु की कई कृतियों का अनुवाद रेड्डी जी ने किया है। सन् 1958 में 'अटके आँसू' कहानियों के संग्रह का अनुवाद निकाला। न्यायमूर्ति - डॉ. राजमन्नार के प्रसिद्ध नाटक 'मनोरमा' का अनुवाद 'आंध्र ज्योति' पत्रिका के सम्पादक डॉ. नार्ल वेंकटेश्वर राव के अनुरोध पर रेड्डी जी ने डॉ. एस.एन. व्यास द्वारा रचित 'रामायण काल में भारतीय संस्कृति' का अनुवाद किया, जो उक्त दैनिक में धारावाहिक सैंतीस सप्ताह प्रकाशित हुआ। पत्रकारिता तथा सृजनात्मक साहित्य सृजन हेतु केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने सन् 1989 ई. में रु. 10,000 के गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया। चेन्नई में प्रकाशित 'चमकता सितारा' हिन्दी दैनिक के प्रधान सम्पादक के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त की।

### विभिन्न समितियों की सदस्यता

हिन्दी प्रचार सभा के साहित्य विभाग के वे सक्रिय लेखक थे। इसी संस्था के प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राध्यापक एवं प्राचार्य रहे। केंद्रीय सरकार के तार-विभाग, भारतीय रेलवे में हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय शास्त्री भवन-सदस्य, कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय विशेषज्ञ, साहित्यिक अकादमी दिल्ली के हिन्दी के परामर्श मंडल आदि ऐसे कई प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित रहकर हिंदी के प्रति पूरे समर्पण भाव से अपना योगदान दिया। देश के विविध संस्थानों एवं संस्थाओं द्वारा आयोजित सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में सौ से अधिक प्रपत्र वाचन किए।

### पुरस्कार एवं सम्मान -

1. 'पंचामृत' - 1956 - भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से रु. 2,300/- पुरस्कार से सम्मानित।
2. 'आंध्र भारती' - उत्तर प्रदेश सरकार - रु. 500/-
3. 1966 में जिन्दगी की राह (उपन्यास) के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से - रु. 1,500/-
4. धरती मेरी माँ उपन्यास- राष्ट्रभाषा परिषद पटना, बिहार ने सन् 1976 - रु. 1,000/- ताम्रपत्र से सम्मानित।

5. केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा – रजत जयंती के अवसर पर – पत्रकारिता तथा सर्जनात्मक लेखन के लिए दिनांक 13-2-1989 को प्रधान मंत्री स्वर्गीय राजीव गाँधी – रु. 10,000/- राशि, ताम्रपत्र, शाल द्वारा सम्मानित।
6. कला व संस्कृति संस्था मथुरा से इन्हें साहित्य वारिधि उपाधि से सम्मानित।
7. पुष्पगिरि पीठाध्यक्ष श्री शंकराचार्य ने – वाङ्मय रत्नाकर से सम्मानित।
8. हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने गाजियाबाद के अधिवेशन में साहित्य वाचस्पति से सम्मानित।
9. इनकी समग्र साहित्य सेवा को ध्यान में रखकर काशी विद्यापीठ ने डी.लिट् की मानद उपाधि देकर सम्मानित किया।

सम्मान एवं पुरस्कारों का तांता लगभग 40 वर्षों से चलना श्री बालशौरि रेड्डी की लोकप्रियता का परिचायक है।

### निष्कर्ष

दक्षिण में अनेक राजनीतिक कारणों के चलते उग्र विरोधी स्वर जब तब उठते ही रहे हैं और – हिन्दी के विरुद्ध विषम मन करनेवाले पेशेवर राजनीतिज्ञ हिन्दी को क्षति पहुँचाने का भगीरथ प्रयास करते रहे हैं, पर साधुमना रेड्डी जी ने सारे विरोधों को नजरन्दाज करते हुए जन मन के बीच हिन्दी की अलख जगाए रखी है। उस मशाल के प्रकाश को कभी निष्प्रभ नहीं होने दिया, जो माँ भारती के विश्वबन्धुत्व भाव को प्रदीप्त करती है। सच देखा जाए तो हिन्दी को दक्षिणी मनस्वियों ने जिस निष्ठा, चिंता और एकांत भाव से हिन्दी को अर्घ्यदान दिया और प्रचार यज्ञ में अपने समर्पण की समिधा अर्पित की है वह अनुपमेय है। और इस सबका ही श्रेय श्री बालशौरि रेड्डी जी को जाता है। महान् लेखक विष्णु प्रभाकर ने : "हिन्दी भाषा के प्रति उनके प्रेम की थाह लेना भी बड़ा कठिन है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे उनकी मातृभाषा हिन्दी ही हो। उनको हिन्दीतर भाषी कहना उनके साथ अन्याय करना है। उनका सारा जीवन हिन्दी के प्रति समर्पित रहा है।"<sup>12</sup> ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी को शत-शत नमन एवं श्रद्धांजलि।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ज्ञानपीठ पत्रिका -विलासगुप्ता, नवंबर ,1964 पृ.सं.16
2. श्री बालशौरी रेड्डी से साक्षात्कार-मद्रास में दिनांक-18.5.1989
3. श्री बालशौरी रेड्डी से साक्षात्कार-मद्रास में दिनांक-18.5.1989
4. श्री बालशौरी रेड्डी से साक्षात्कार-मद्रास में दिनांक-18.5.1989
5. तेलुगु संस्कृति- डॉ पी. वी. नरसा रेड्डी पृ.सं. 85
6. नया साहित्य- नवंबर 1962, पृ.सं.3 लेखक बालशौरि रेड्डी
7. प्रोफेसर पृ.सं. 192
8. शबरी पृ सं. 54
9. चांदी का जूता पृ. सं. 4
10. बुक्स चिल्ड्रेन एंड मैन, पाल हावर्ड पृ.सं. 18
11. तेलुगु वङ्मय: विविध विधाएं, बाल शौरी रेड्डी पृ.सं. 129
12. विष्णु प्रभाकर वैसाखी: दोशब्द